Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

Original Article

भारत छोड़ो आन्दोलन में नारी की सहभागिता की भूमिका

डॉ. डौली कुमारी
सामाजिक विज्ञान संकाय (इतिहास) ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा
Email: Daulikri2020@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2026-180206
ISSN: 2230-9578
Volume 18
Issue 2(A)
Pp. 20-23
February - 2026

शोध सारांश

मुगल सम्राज्य से जब सता अंग्रेजों के हाथ में गई तो पहले अंग्रेजों का व्यापारिक उद्देश्य थाप र धीरे–धीरे उनका राजनैतिक रूप भी सामाने नजर आने लगा और वे अपने इस कुटिल चाल में काययाब भी हो गये। धीरे–धीरे उनका क्रिया–कलापों के प्रति जनमानस में असंतोष की भावना पनपने लगी। इसी का परिणाम सन 1857 के सिपाही विद्रोह के रूप में दिखा ।सन 1857 के विद्रोह के बाद जनमानस संगठित होने लगा और अंग्रेजों के विरूद्ध लामबंद होने लगा। प्रबुद्ध लोगों और आजादी के दीवारों द्वारा सन 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना की गई। प्रारंभिक 20 वर्षों में 1885 से 1905 तक भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पर उदारवादी नेताओं का दबदबा रहा। इसके बाद धीरे धीरे चरमपंथी (गरमदल) नेताओं के हाथों में बागडोर जाने लगी। इसी बीच महात्मा गांधी दक्षिणी अफीका से 9 जनवरी 1915 को स्वेदश (मुम्बई) में कदम रखा। तभी से हर साल 9 जनवरी को प्रवासी दिवस मनाते आ रहे हैं।

मुख्य शब्द :– *महिलायें, जनमानस, आन्दोलन, महात्मागांधी।*

Submitted: 15 Jan. 2026
Revised: 25 Jan. 2026
Accepted: 10 Feb. 2026
Published: 28 Feb. 2026

व्याख्या

म्इ 1915 में गांधी जी ने अहमदाबाद के पास कोचरब में अपना आश्रम स्थापित किया लेकिन वहाँ प्लेग फैल जाने के कारण साबरमती क्षेत्र में आश्रम की स्थापना की। दिसम्बर 1915 में कांग्रेस के मुम्बई अधिवेशन में गांधी जी ने भाग लिया गांधी जीने यहाँ विभाजित भारत को महसूस किया देश अमीर गरीब, स्वर्ण–दलित हिन्दू–मुस्लिम, नाम–गरम विचारधारा, रूढ़िवादी आधुनिक भारत में ब्रिटिश साम्राज्य के समर्थक, ब्रिटिश विरोधी जिनको इस बातका बहुत कष्ट था कि देश गुलाम है। गांधी जी किसके पक्ष में खड़े हों या सबाको साथ लेकर चले। गांधी जी उस समय के करिश्माई नेता थे जिन्होंने दक्षिण अफ्रीका में सबको साथ्ज्ञ लेकर सबके अधिकारों की लड़ाई नस्लभेदी सरकार के विरूद्ध सत्याग्रह में माध्यम से लोहा लिया था और कामयाब बी हुऐ थे। गांधी जी ने पहल बार देश में सन् 1917 में बिहार के चंपारन में सत्याग्रह आंन्दोलन किया था। उनका आन्दोलन जन आन्दोलन होता था। चंपारण में नील किसानों के तीन कठिया विधि से मुक्ति दिलाई और अंग्रेजों से अपनी बात मनवाने में कामयाब हुए। गरीबों को सुत काटने एवं उससे कपड़े बनाने की प्रेरणा दी जिससे इनके जीवन–यापन मं गुणात्मक सुधार आया। गुजरात क्षेत्र का खेड़ा क्षेत्र–बाढ़ एवं अकाल से पीड़ित था जैसे सरदार पटेल एवं अनेक स्वयं सेवक आगे आये उन्होंने ब्रिटिश सरकार से कर सहत की मांग की। गांधी जी के सत्याग्रह के आगे अंग्रेजों को झुकना पड़ा किसानों को कर देने से मुक्ति मिली सभी कैदी मुक्त कर दिए गये गांधी जी की ख्याति देश भर में फैल गई। यही नहीं खेड़ा क्षेत्र के निवासियों को स्वच्छता का पाठ पढ़ाया। वहाँ के शराबियों को शराब की लत को भी छुड़वाया। 1914 से 1918 तक प्रथम विश्व युद्ध के दौरान अंग्रेजों ने रालेट एक्ट के तहत प्रेस की आजादी पर प्रतिबंध लगा दिया, रालेट एक्ट के तरत जाँच के किसी को भी कारागार में डाला जा सकता था। गांधी जी ने देश भर में रालेट एक्ट के विरूद्ध अभियान चलाया। पंजाब में इस एक्ट का विशेष रूप से विरोध हुआ पंजाब जाते समय में गांधी जी को कैद कर लिया गया साथ्ज्ञा ही स्थानीय कांग्रेसियों को भी कद कर लिया गया। 13 अप्रैल को 1919 बैसाखी के पर्व पर जिसे हिन्दू–मुस्लिम सिख सभी मनाते थे अमृतसर के जलियांवाला बाग में लोग इकठ्ठे हुए थे।

Quick Response Code:
Website:
https://jrdrvb.org/
DOI:
10.5281/zenodo.18933109
OPEN ACCESS

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
डॉ.डौली कुमारी, सामाजिक विज्ञान संकाय (इतिहास)ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

How to cite this article:
कुमारी, . डौली . (2026). भारत छोड़ो आन्दोलन में नारी की सहभागिता की भूमिका. Journal of Research & Development, 18(2(A)), 20–23. https://doi.org/10.5281/zenodo.18933109

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

जनसभा में नेता भाषण दे रहे थे जरनल डायर ने निकलने के एकमात्र रास्ता को बंद कर निर्दोश बच्चों स्त्रियों व पुरूषा को गोलियों से भून डाला एक के ऊपर एक गिर कर लाशों के ढेर लग गये जिससे पूरा देश आहत हुआ गांधी जी ने खुल कर ब्रिटिश सरकार का विरोध किया अब एक ऐसे देशव्यापी आन्दोलन की जरूरत थी जिससे ब्रिटिश सरकार की जड़े हिल जाएँ। खिलाफत आंदोलन के जरीये सम्पूर्ण देश में आंदोलन को धार देने के लिए हिन्दू–मुस्लिम एकता पर बल दिया और सितंबर 1920 के कांग्रेस अधिवेशन में खिलाफत आंदोलन को समर्थन देने के लिए सभी नेताओं को मना लिया। असहयोग आंदोलन की गांधी जी ने अपना परचम देने के लिए सभी नेताओं पूरे देश में लहरा दिया। जिस कारण 1921–22 के बीच आयात आधा हो गया 102 करोड़ से घटकर 57 करोड़ रह गया। दिसंबर 1921 में गांधी जी को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष नियुक्त किया गया । असहयोग आंदोलन का उद्देश्य अब स्वराज्य हासिल करना हो गया। गांधी जी ने अध्यक्ष बनते ही कांग्रेस को राष्ट्रीय फलक पर पहुचाने की बात की। इन्होंने एक अनुशासनात्मक समिति को गठन किया। और असहयोग आंदोलन का उग्र होने की संभावना से फरवरी 1922 में वापस ले लिया क्योंकि चौराचौरी सहित जगह–जगह हिंसक घटनाये होने लगी। पर इन्होंने अपनी बात को पूरजोर तरीके के रखना जारी रखा। 1925–1928 तक गांधी जी ने समाज सुधार के लिए भी काफी काम किया। 1926 में विश्वव्यापी मंदी के कारण कृषि उत्पादों की कीमत गिरने लगी। 1930 के बाद तो पूरी तरह धराशायी ही हो गई। सन् 1928 में साइमन कमीशन भारत पहुँता तो उसका स्वागत देशवासियों में साइमन कमीशन वापस जाओं नारे के साथ किया। धीरे–धीरे कांग्रेस का दबदबा पूरे देश में बढ़ता गया और राष्ट्र की भावना को प्रेरित कर देशवासियों को एक सूत्र में पिरोने का काम गांधीजी मे बाखुबबी किया। गांधी जी के बढ़ते प्रभाव के कारण देशवासी अपने आप को एक सूत्र में पिरनों लगे। इस आंदोलन को शांत करने के लिए तत्कालिन वायसराय लार्ड इरविन ने अक्टूबर 1929 में भारत के लिए डोमिनीयन स्टेट्स का गोलमोल सा ऐलान कर दिया। इस बारे में कोई सीमा भी तय नहीं किया गया और कहा गया कि भारत के संविधान बनाने के लिए गोलमेज सम्मेलन आयोजिक किया जायेगा।

1930–32 लंदन में तीन गोलमेज सम्मेलन हुआ। गांधी जी 1931में जेल से रिहा हुए तो गांधी–इरविन–समझौता हुआ जिससे सारे कैदियों को रिहा किया गया तथा तटीय इलाके में नमक उत्पादन की छुट दी गई। पर राजनैतिक स्वतंत्रता के लिए बातचीत का आश्वासन दिया गया। गांधी जी दूसरे गोलमेज सम्मेलन में भाग लिये पर बात कुछ खास बनी नहीं। 1935 में गर्वमेंट ऑफ इंडिया एक्ट बनी फिर 2 साल बाद सीमित मताधिकार का प्रयोग करने की अनुमति दी गई।

भारत छोड़ो आंदोलन

1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में पुनः एक बार महिलाओं को गतिशीलता प्रदान की। 8 अगस्त को महात्मा गांधी की घोषणा तथा उनके सहित कांग्रेस के शीर्ष नेताओं की 8–9 अगस्त मध्यरात्रि को हुई गिरफ्तारी से पूरे देश में ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध क्षोभ और उत्तेजना की लहर दौड़ गई। गांधी जी ने लोगों को 'करो या मरो' की संदेश दिया, जिससे उनमें क्राांति की भावना उत्पन्न हो गई और वे हिंसात्मक गतिविधियों में लग गये । रेल पटरियां उखाड़ना, पोस्ट ऑफिस तथा सरकारी कार्यालयों में आग लगाना और ऐसे कार्य करना जिससे ब्रिटिश प्रशासन पंगु हो जाये। इस आंदोलन का कार्यक्रम बन गया। जिस समय मुंबई में शीर्ष कांग्रेस के नेताओं को गिरफ्तारी हुई, कुछ महिला कांग्रेसियों ने सफलतापूर्वक गिरफ्तारी से बचकर भूमिगत कांग्रेस के गठन का निश्चत किया था। उनमें सुचेता कृपलानी, अरूणा आाफ अली तथा मृदुला साराभाई प्रमुख थी। पुलिस से बचने के लिए कांग्रेस का कार्यालय बार–बार बदलना पड़ता था। इस संस्था से सफलतापूर्वक देश के विभिन्न प्रान्तों के कार्यशील नेताओं से संपर्क कर भारत छोड़ों आन्दोलन का संचालन किया।

इस भूमिगत आंदोलन में सुचेता कृपलानी और अरूणा आसफ अली जैसी महिलाओं का सक्रिय योगदान था। उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य के विरूद्ध देश की जनता को जागृत करने के उद्देश्य से विभिन्न स्थानों की गुप्त यात्राएं की। अनेक बार वस्त्र बदलकर वे विभिन्न प्रान्तों के भुमिगत आन्दोलनकारियों से संपर्क करती तथा उन्हें आंदोलन से संबंधित निर्देश देती थी। इन महिलाओं के साहस योग्य नेतृत्व से लगभग एक वर्ष तक क्रांतिकारी भूमिगत आन्दोलन चलता रहा। अपने अभियान आन्दोलन चलता रहा। अपने अभियान के दौरान उन्हें साधारण जनता, व्यवसायी उद्योगपति तथा सेना एवं सरकारी अधिकारियों से भी भरपूर सहयोग मिला। उन दिनों भारतीय वायु सेना के एक पायलेट बीजू पटनायक ने, जिन्हें सेना के लिये सेना के लिये सामग्री लेकर अनेक स्थानों में जाना पड़ता था, अरूणा आसफ अली को अपने हवाई जहाज में छुपाकर विभिन्न स्थानों में ले गये थे।इस क्रांतिकारी और भूमिगत आंदोलन में महिलाओं ने एक और महत्वपूर्ण कार्य संपादित किया। यह था भूमिगत रेडियो स्टेशन की स्थापना और इसका प्रसारण । इस कार्य में मुंबई की एक छात्रा उषा मेहता विशेष रूप से भूमिगत रेडियों के कार्यक्रमों का प्रसारण करती थी। प्रारंभ में इस रेडियो से सीमित कार्यक्रम प्रसारित होते थे परंतु बाद में इससे भारत छोड़ो आंदोलन संबंधित समाचार तथा प्रमुख भुमिगत कांग्रेसी नेताओं के भाषण प्रसारित होने लगे। सरकार ने इस रेडियो स्टेशन का पता लगाने का बहुत प्रयास किया परंतु उषा मेहता और उनकी सहेलियों द्वारा बार–बार प्रसारण केन्द्र बदले जाने से पुलिस को सफलता नहीं मिली। बाद में उषा मेहता और उनके साथियों को गिरफ्तार कर उन्हें आजन्म कारावास का दंड दिया गया।

छत्तीसगढ़ भी भारत छोड़ो आंदोलन से अछूता नहीं रहा। गांधी जी और अन्य शीर्षस्थ नेताओं की गिरफ्तारी की सूचना मिलते ही रायपुर नगर में 9 अगस्त को आम हड़ताल हो गई। लाऊड–स्पीकर के माध्यम से नेताओं की गिरफ्तारी की सूचना दी गई थी। बाजार, स्कूल, कॉलेज सब बद कर दिये गए। शाम 4 बजे राष्ट्रीय विद्यालय से एक विशाल जुलूस निकला। "अंग्रेजों भारत छोड़ों" के नारों से आकाश गूंज उठा। रायपुर के तात्यापारा चौक तक आते–आते जुलूस में 20 हजार से भी अधिक मजदूर, विद्यार्थी और नागरिक शामिल हो गए। पुलिस कप्तान जूलूस को गांधी चौक नहीं जाने देना चाहते थे, परन्तु 20 हजार जनता को रोकने की शक्ति उनमें भी नहीं थी। रात 8 बजे गांधी चौक में आमसभा हुई, जिसमें लोगों ने सरकार विरोधी नारे लगाये। रायपुर की तरह बिलासपुर, दुर्ग आदि स्थानों में भी जुलूस निकाले गये तथा सभाएं हुई। अनेक लोग गिरफ्तार किये गये। अकेले रायपुर जिले में गिरफ्तारियों की संख्या 447 तक पहुँच गई थी। भारत छोड़ो आंदोलन में जहां एक ओर पुरूष सक्रिय थे, तो दुसरी ओर महिलाएं भी पीछे नहीं थीं छत्तीसगढ़ में जिन महिलाओं ने स्वाधीनता आन्दोलन में अपना महत्वपूर्ण

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

योगदान दिया उनमें डॉ० राधाबाई का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। जिन्होंने तन–मन–धन सब कुछ देश सेवा में अर्पित कर दिया। 46 सविनय अवज्ञा से लेकर भारत–छोड़ो आंदोलन तक के सक्रिय रहीं 1942 के आंदोलन में भाग लेकर वे जेल गई। जेल में उनकी सहयोगी बहनें थी– राजकुंवर बाई बघेल, श्रीमती मोची बाई श्रीवास्तव, श्रीमती लीलाबाई, श्रीमती सुमिरित बाई, श्रीमती रूक्मणीबाई एवं श्रीमती नोटरी बाई। डॉ० राधाबाई जेल में महिलाओं को आध्यात्मिक उन्नति तथा सत्याग्रह की प्रेरणा देती रहती है व जेल से बाहर छूटते ही पुनः आंदोलन में रत् हो जाती थी। भारत छोड़ो आंदोलन ने छत्तीसगढ़ की महिलाओं में एक नेय उत्साह का संचार किया। महिलाओं ने एक बड़ी संख्या में इस आंदोलन में खुलकर भाग लिया और कारावास का दंड भोगा। इन महिलाओं में श्रीमती इन्द्रोतिन बाई, श्रीमती दयाबाई, श्रीमती भवन्तीन तथा श्रमती भागवती को 6–6 माह का कारावास की सजा हुई। कुछ सत्याग्रही महिलाओं के साथ पुलिस द्वारा बर्बर व अभद्र व्यवहार किये जाने पर उन्हें माफी मॉगने के लिये बाध्य किया गया। इस प्रकार बन महिलाओं द्वारा पुलिस आतंक की जरा भी परवाह न कर लगातार आंदोलन में सक्रियता से भाग लिया। जुलूस में भाग लेने के कारण श्रीमती भवानीबाई को 5 माह 22 दिन की सजा काटनी पड़ी श्रीमती भागीरथी बाई ने इस आन्दोलन में भुमिगत रहकर सहयोग दिया। श्रीमती मनटोरा बाई तथा श्रीमती मनमत बाई ने क्रमशः बंगोली एवं खुटेरी जैसे पिछड़े क्षेत्रों में रहकर महिला जागरण का कार्य किया। जिसका कारण इन दोनों को 6–6 के कारावास की सजा काटनी पड़ी।

इनके अतिरिक्त डॉ० खूबचंद बघेल की पत्नी श्रीमती राजकुंवर बघेल ने भारत छोड़ो आन्दोलन में सक्रिय भाग लेकर 8 माह के कारावास की सजा काटी। राधाबाई की सहयोगी श्रीमती रूक्मणी बाई ने ब्रिटिश सरकार के खिलाफ जत्थे तैयार करने, जुलूस निकालने तथा धरना देने में जो सक्रियता दिखाई उसके लिये उन्हें 1 वर्ष के कारावास का दण्ड दिया गया। इसी श्रृंखला में जटाशंकर जी की पत्नी श्रीमती रूक्मणी, श्री माधव प्रसाद की पत्नी श्रीमती रोहिणी बाई, श्री विश्राम की पत्नी लीलाबाई, श्रीमती विश्वास तथा श्रीमती रामवती वर्मा ने इस आन्दोलन के तहत प्रभात फेरियां निकाली, विदेशी कपड़ों का त्याग कर खादी ग्रहण किया तथा शराब की दुकानों पर धरना देने का कार्य किया। अपने इन कार्यों के लिए इन सभी को 8–8 माह के कारावास की सजा काटनी पड़ी। भारत छोड़ो आंदोलन की प्रभाव दुर्ग, बिलासपुर तथा जगदलपुर में भी रहा। बिलासपुर की सुफी पत्नी का नाम इस क्षेत्र का नाम इस क्षेत्र से महिला जागरण तथा जुलुसों का नेतृत्व करने में अग्रणी रहा, जिसके कारण उनको 6 माह के कारावास की सजा काटनी पड़ी। जगदलपुर से श्रमती भगवतीज जाधव का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। आन्दोलन में भाग लेने तथा प्रचार–प्रसार का कार्य करने के कारण इन्हें 1942 से अप्रैल 1943 तक बंदी होकर नागपुर तथा जबलपुर जेलों में कारावास भोगना पड़ा।

उपरोक्त महिलाओं के अतिरिक्त ऐसी अनेक महिलायें भी थी जिन्हें सजा तो नहीं हुई मगर जो देश की आजादी में अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग करती रहीं। खादी का प्रचार करना, नारे लगाना, जुलूसों में जाना, कार्यकर्ताओं के भोजन की व्यवस्था करना तथा पति के जेल जाने पर अकेले ही आर्थिक संकटों का सामना इन्होंने किया। लड़कियों में डॉ० खूबचंद बघेल की पुत्री पार्वती बाई अपनी सहेलियों की टोली बनाकर जुलूस में जाया करती थी ।नारे लगाना, पेपर बांटना, एक गांव से दूसरे गांव संदेश लेकर जाना, खादी का प्रचार करना आदि कार्य करती थी। इस प्रकार श्रीमती बिंदाबाई चन्द्राकर पत्नी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्री केजूराम चन्द्राकर, बिटन बाई तथा उनकी जेठानी श्रीमती बेरान बाई दोनों आंदोलन में सक्रियता से भाग लिया।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का छत्तीसगढ़ क्षेत्र में काफी प्रभाव रहा। असहयोग आन्दोलन से लेकर भारत छोड़ो आन्दोलन तक लगभग समस्त आन्दोलनों में इस क्षेत्र की महिलाओं ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों की महिलाओं की आंदोलन में भागीदारी अत्यन्त उत्साहवर्धक थी। जहां एक ओर शहरी क्षेत्र की महिलायें जुलूस निकालने, खादी कार्यक्रम, विदेशी वस्त्रों की होली जलाने आदि कार्यक्रमों में भाग लेती थी, वहीं दूसरी ओर ग्रामीण महिलाएं जंगल सत्याग्रह में भाग ले रही थीं। महिलाओं ने आन्दोलन के अन्तर्गत आने वाली समस्याओं का भी डटकर मुकाबला किया। इनके सम्मुख तो समस्याओं का अम्बार की लगा हुआ था। पुरूष वर्ग में कई ऐसे भी थे जो घर से बाहर निकल कर नारे लगाने वाली, जेल जाने वाली, तथा शराब की दुकान में पिकेटिंग करने वाली महिलाओं को अच्छा नहीं समझते थे। इन समस्याओं के अलावा इन्हें पारिवारिक समस्याओं का सामना करना पड़ा। इन महिलाओं का उस समय आर्थिक संकटों का सामना करना पड़ता था जब इनके पति जेल में डाल दिये जाते। फिर भी हजारों प्रकार की मुसीबतों को सामना करते हुए महिलाओं ने देश की आजादी में अपना सहयोग दिया।

निष्कर्ष

सितंबर 1939 में द्वितीय विश्व युद्ध में भारत को बिना अनुमति के अंग्रेजों ने युद्ध में झोक दिया फिर युद्ध समाप्ति से पहले जपान पर परमाणु बम से हमले की निंदा की, आहत भी हुए पर अपना सत्या और अहिंसा का मार्ग नहीं छोड़ा। सविनय अवज्ञा आंदोलन हो या सन 1942 में गांधी जी द्वारा अंग्रेजों भारत छोड़ो आंन्दोलन में करो या मरो का नारा। आजादी की लड़ाई में गांधी जी का योगदान धीरे धीरे शिखर को चुमने लगा। अंत में अंग्रेज विवश हो गये और ब्रिटेन के तत्कालीन प्रधानमंत्री क्लीमेंट एटली के पहल पर कैबिनेट मिशन की घोषणा कर दी गई। ब्रिटीश कैबिनेट मिशान 24 मार्च 1946 को भारत आया। अंततः 15 अगस्त 1947 को भारत एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में दुनिया के पटल पर उदय हुआ। भारतीय स्वतंत्रता में गांधी जी का योगदान अद्वितीय है। आज भी हर भारतीय के जनमानस में गांधी जी का आजादी के लिए संघर्ष की दास्तान विद्यमान है।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

संदर्भ सूची

1. शिक्षा के समाज शास्त्रीय सिद्धान्त, रमन बिहारी लाल, पृष्ठ – 321, मेरठ प्रकाशन, 2014
2. महीस पाश्चात्य दर्शन का समीक्षात्म्क इतिहास, प्रकाशक, नरेन्द्रप्रकाश जैन, मोतीलाल बनारसी दास, जैन, दिल्ली 2004
3. शर्मा चन्द्रधर, भारतीय दर्शन, आलोचना और अनुशीलन, प्रकाशक, नरेन्द्रप्रकाश, जैन, मोतीलाल बनारसीदास, जैन, दिल्ली, 2012
4. जार्ज टामस वहाइट पैटिक दर्शनशास्त्र का परिचय, प्रकाशन, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़ 2013
5. प्रकाश दया रस्तौगी, आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन, प्रकाशन, साधना प्रकाशन मेरठ, 2009
6. लाल बसन्त, समकालीन पाश्चात्य दर्शन, प्रकाशक, नरेन्द्र प्रकाश जैन, मोतीलाल जैन बनारसीदास, नई दिल्ली, 2005
7. पाठक, पी.डी. व जी.एस.डी.त्यागी :– "शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त" विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा 2012
8. पाण्डेय आर. एस.:– भारतीय शिक्षा के विभिन्न आयाम विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा 2014
9. कमलाकांत शर्मा :– छत्तीसगढ़ में स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का परिचय पृ. – 7, 2012
10. मोहम्मद शमीम :–छत्तीसगढ़ में गांधीवादी आन्दोलन में छात्रों की भूमिका (अप्रकाशित शोध प्रबंध) पृ. 19